उनके साथ प्रेम का विनिमय करते हैं। परमेश्वर, सखा, पुत्र, प्रियतम आदि विविध रूपों में श्रीकृष्ण की कामना करते हुए भक्तों के प्रेम की प्रगाढ़ता के अनुरूप श्रीकृष्ण उन सभी को समभाव से पुरस्कृत करते हैं। प्राकृत-जगत् में भी भगवान् और भक्तों में परस्पर इसी प्रकार रस और भाव का विनिमय होता है। शुद्धभक्तों को इस जगत् में तथा भगवद्धाम में भी श्रीभगवान् का सान्निध्य रहता है और इस प्रकार उनकी सेवा में निमग्न हुए वे महानुभाव भगवद्भक्ति के अलौकिक रसानन्द का आस्वादन करते हैं। श्रीकृष्ण उन निर्विशेषवादियों की भी सहायता करते हैं जो अपने जीव-स्वरूप को समाप्त करके पारमार्थिक आत्महत्या करने को आतुर हैं। श्रीकृष्ण उन्हें अपनी ब्रह्मज्योति में विलीन कर लेते हैं। ये निर्विशेषवादी सच्चिदानन्दघन भगवान् श्रीश्यामसुन्दर को स्वीकार नहीं करते। इसलिए साक्षात् श्रीभगवान् की सेवा से प्राप्त दिव्य आनन्द का आस्वादन नहीं कर सकते, क्योंकि वे ब्रह्मज्योति में लीन हो जाते हैं। उनमें से कुछ, जो निर्विशेषसत्ता में भी स्थित नहीं हो पाते, वे अपनी सक्रियताविषयक सुप्त कामना से प्रेरित हुए इस संसार रूपी क्रियाक्षेत्र में पुनरागमन करते हैं। उनका भगवद्धाम में गमन नहीं होता; वरन् प्राकृत लोकों में ही कर्म करने का अवसर उन्हें फिर दिया जाता है। जो सकाम कर्मी हैं, उन्हें श्रीभगवान् यज्ञेश्वर के रूप में कर्म का वाञ्छित फल देते हैं। सिद्धिकामी योगियों की भी अभीष्ट-सिद्धि हो जाती है। इस प्रकार सभी प्राणी सफलता के लिए भगवत्कृपा पर आश्रित हैं। वास्तव में परमार्थ की विविध पद्धतियाँ एक ही पथ पर भिन्न-भिन्न मात्रा में प्रगति करने के तुल्य हैं। अतएव कृष्णभावना रूपी चरम कृतार्थता की उपलब्धि से पूर्व सब उद्यम अपूर्ण हैं। श्रीमद्भागवत में उल्लेख है—

अकामः सर्वकामो वा मोक्षकामुदारधीः।
तीव्रेण भक्तियोगेन यजेत्पुरुषं परम्।।

मनुष्य चाहे भक्तों के समान निष्काम हो, अथवा सम्पूर्ण कर्मफल चाहता हो या मोक्ष का अभिलाषी ही क्यों न हो, उसे पूरी सामर्थ्य से श्रीभगवान् की भक्ति ही करनी चाहिए। इससे वह परम सिद्धि प्राप्त हो जायगी, जिसका पर्यवसान कृष्णभावना है। (श्रीमद्भागवत २.३.१०)

27/3

कांक्षन्तः कर्मणां सिद्धिं यजन्त इह देवताः।
क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा।।१२।।

कांक्षन्तः=कामना करते हुए; **कर्मणाम्**=सकाम कर्मों की; **सिद्धिम्**=फल रूपसिद्धि की; **यजन्ते**=यज्ञ के रूप में आराधना करते हैं; **इह**=इस जगत् में; **देवताः**=देवताओं की; **क्षिप्रम्**=अतिशीघ्र; **हि**=निश्चित ही; **मानुषे लोके**=मनुष्यलोक में; **सिद्धिः**=सिद्धि; **भवति**=होती है; **कर्मजा**=सकामकर्म की।

अनुवाद

कर्मफल की कामना से मनुष्य इस संसार में देवताओं को यज्ञों द्वारा पूजते हैं